IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 3, May - June 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.028

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

ऐतिहासिक स्थलों की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण की चुनौतियाँ (जैसलमर की हवेलियों के विशेष संदर्भ में)

देवेन्द्र कुमार

शोधार्थी, इतिहास विभाग

ज्योति विद्यापीठ, महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान (भारत)

सारांश

जैसलमर, जिसे अपनी सुनहरी बलुआ पत्थर की अद्वितीय कारीगरी और भव्य स्थापत्य के कारण "स्वर्ण नगरी" के नाम से विश्वभर में जाना जाता है, राजस्थान की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ स्थित हवेलियाँ, जैसे पटवों की हवेली, नथमल की हवेली और सालिम सिंह की हवेली, न केवल स्थापत्य सौंदर्य की अनुपम मिसाल हैं बल्कि मरुस्थलीय जीवन, राजपूत संस्कृति, व्यापारिक समृद्धि और सामाजिक संरचना के जीवंत दस्तावेज के रूप में भी मानी जाती हैं। ये हवेलियाँ अपनी नक्काशीदार झरोखों, जटिल कारीगरी, अद्वितीय डिजाइन और कलात्मक शिल्प के लिए जानी जाती हैं, जो न केवल स्थानीय कारीगरों की उच्च कोटि की कला को दर्शाती हैं, बल्कि उस समय के सामाजिक–आर्थिक इतिहास को भी प्रतिबिंबित करती हैं। हालांकि, वर्तमान समय में इन स्थापत्य धरोहरों की स्थिति गंभीर चिंता का विषय बन गई है। प्राकृतिक क्षरण, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, अनियंत्रित पर्यटन, प्रदूषण, तथा स्थानीय स्तर पर अपर्याप्त संरक्षण प्रयास इनके दीर्घकालिक अस्तित्व को खतरे में डाल रहे हैं। कई हवेलियाँ निजी स्वामित्व में होने के कारण उपेक्षा का शिकार हैं, जबकि कुछ का मूल स्वरूप आधुनिक निर्माण सामग्रियों और अनियंत्रित मरम्मत कार्यों के कारण विकृत हो रहा है। साथ ही, शहरीकरण एवं व्यावसायीकरण के दबाव ने इनके आस–पास के ऐतिहासिक परिवेश को भी प्रभावित किया है, जिससे इनकी सांस्कृतिक प्रामाणिकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

यह शोध–पत्र जैसलमर की हवेलियों की वर्तमान भौतिक एवं संरचनात्मक स्थिति का विस्तृत आकलन करेगा, साथ ही संरक्षण से संबंधित मुख्य चुनौतियों, जैसे संसाधनों की कमी, नीतिगत कमियाँ, स्थानीय जागरूकता का अभाव, और कानूनी संरक्षण तंत्र की सीमाओं का विश्लेषण भी करेगा। इसमें स्थानीय समुदाय, कारीगरों, पर्यटन उद्योग, और सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अध्ययन का उद्देश्य व्यावहारिक, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और सतत संरक्षण रणनीतियों का सुझाव देना है, जिससे इन अद्वितीय स्थापत्य धरोहरों की ऐतिहासिक, कलात्मक और सांस्कृतिक महत्ता आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रह सके।

मूल शब्द : स्थापत्य धरोहर, सांस्कृतिक विरासत, संरक्षण रणनीतियाँ, संरक्षण चुनौतियाँ

परिचय :

जैसलमर, राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित एक ऐतिहासिक नगर है, जिसे अपनी सुनहरी बलुआ पत्थर से निर्मित इमारतों और अद्वितीय स्थापत्य कला के कारण "स्वर्ण नगरी" के नाम से जाना जाता है। यहाँ की हवेलियाँ, जैसे पटवों की हवेली, नथमल की हवेली और सालिम सिंह की हवेली, न केवल स्थापत्य सौंदर्य की अनुपम मिसाल हैं, बल्कि यह क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास की जीवंत अभिव्यक्ति भी हैं। इन हवेलियों में की गई बारीक नक्काशी, कलात्मक झरोखे, अलंकृत दरवाजे और आंतरिक सज्जा न केवल उस समय के कारीगरों की उत्कृष्ट शिल्पकला को दर्शाते हैं, बल्कि मरुस्थलीय जीवन शैली और व्यापारिक समृद्धि के महत्वपूर्ण दस्तावेज भी प्रस्तुत करते हैं। समय के साथ इन स्थापत्य धरोहरों की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। प्राकृतिक क्षरण, जलवायु परिवर्तन, अनियंत्रित पर्यटन, शहरीकरण, और व्यावसायीकरण के दबाव ने इनके मूल स्वरूप और संरचनात्मक स्थायित्व को प्रभावित किया है। कई हवेलियाँ उचित रखरखाव के अभाव में जर्जर होती जा रही हैं, जबकि कुछ का सौंदर्य और प्रामाणिकता आधुनिक मरम्मत कार्यों एवं अवैज्ञानिक पुनर्निर्माण से क्षतिग्रस्त हो रही है। संरक्षण संबंधी सरकारी नीतियों और योजनाओं के बावजूद संसाधनों की कमी, जागरूकता का अभाव और कानूनी संरक्षण तंत्र की सीमाएँ, इन धरोहरों के लिए गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण केवल भौतिक संरचनाओं को सुरक्षित रखने का कार्य नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान, विरासत और सामाजिक स्मृति को भी संरक्षित करने का प्रयास है। जैसलमर की हवेलियों का संरक्षण न केवल पर्यटन उद्योग और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भावी पीढ़ियों के लिए हमारे अतीत की धरोहर को सुरक्षित रखने का दायित्व भी है। यही कारण है कि इन हवेलियों की वर्तमान स्थिति का आकलन करना और उनके संरक्षण की चुनौतियों को समझना अत्यंत आवश्यक है, ताकि इनके संरक्षण हेतु प्रभावी, व्यावहारिक और दीर्घकालिक रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

उद्देश्य

- जैसलमर की प्रमुख हवेलियों की वर्तमान भौतिक एवं संरचनात्मक स्थिति का आकलन करना
- संरक्षण में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना
- सरकारी, गैर–सरकारी एवं निजी प्रयासों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना
- स्थानीय समुदाय एवं पर्यटन उद्योग की भूमिका का विश्लेषण करना
- सतत एवं व्यावहारिक संरक्षण रणनीतियाँ प्रस्तावित करना

अध्ययन क्षेत्र :

जैसलमेर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण जिला है। इसे स्वर्ण नगरी (Golden City) के नाम से भी जाना जाता है। यह राजस्थान के पश्चिमी भाग में अवस्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह राज्य का सबसे बड़ा और भारत का कच्छ (गुजरात) व लेह (लद्दाख) के बाद तीसरा सबसे बड़ा जिला है। भौगोलिक दृष्टि से यह $26^0$46′ उत्तरी अक्षांश से $28^0$04′ उत्तरी अक्षांश तक और $69^0$25′ पूर्वी देशांतर से $72^0$25′ पूर्वी देशांतर के बीच लगभग 38,401 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यहाँ की भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत उत्कृष्ट है। दूर–दूर तक फैले रेत के टिलों के बीच में कुछ पथरीले पठार और पहाड़ियां, छोटी वनस्पति, कम वर्षा, अत्यधिक तापक्रम और संघर्षपूर्ण जीवनशैली जैसलमेर जिले को अत्यंत विशेषीकृत श्रेणी में इंगित करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से, जैसलमेर की स्थापना 1156 ई. में भाटी राजपूत शासक महारावल जैसल द्वारा की गयी थी। मध्यकाल में जैसलमेर प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर अवस्थित होने के कारण एक समृद्ध व्यापारिक केंद्र रहा है। यहाँ का किला पीले रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित है जो सूर्य की रोशनी में स्वर्ण जैसा चमकता है, जिसके कारण जैसलमेर के किले को "सोनार किला" कहा जाता है। यह किला यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध है। इसी प्रकार जैसलमेर की हवेलियाँ अपनी स्थापत्य कला और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है जो सुनहरे पत्थरों से बनी हैं। ये हवेलियाँ अपनी जटिल नक्काशी और बालकनियों के लिए अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

जैसलमेर सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत समृद्ध है। यहाँ की लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ, कठपुतली कला, और शिल्पकला विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में यहाँ का प्रसिद्ध उत्सव "जैसलमेर डेज़र्ट फेस्टिवल" बहुत लोकप्रिय है, जिसमें ऊँट दौड़, लोकनृत्य, पारम्परिक परिधान प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं, जो देश–विदेश के पर्यटकों को अत्यधिक आकर्षित करती हैं। उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि जैसलमेर अपने अनोखे रेगिस्तानी सौंदर्य, ऐतिहासिक धरोहरों, और जीवंत संस्कृति के कारण और भी विशिष्ट बनता है। आधुनिक विकास के साथ, जैसलमेर ने अपनी पारंपरिक पहचान को बनाए रखते हुए पर्यटन और कला संस्कृति को और मजबूत किया है। इसके अलावा, जैसलमेर केवल राजस्थान ही नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर भी है।

जैसलमेर की प्रमुख हवेलियाँ :

राजस्थान के जैसलमेर नगर की हवेलियाँ न केवल स्थापत्य कला की उत्कृष्ट मिसाल हैं, बल्कि वे उस युग की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि का भी प्रतीक हैं। ये हवेलियाँ मुख्यतः व्यापारियों, अमीर सरदारों और अभिजात वर्ग द्वारा बनवाई गई थी। पीले बलुआ पत्थर से निर्मित ये भवन अपने जटिल नक्काशीदार झरोखों, भित्ति चित्रों और भव्य प्रवेश द्वारों के लिए प्रसिद्ध हैं। कुछ प्रसिद्ध हवेलियाँ इस प्रकार हैं –

पटवों की हवेली :

एक समृद्ध व्यापारी गुमानचंद पटवा द्वारा अपनें पुत्रों के लिए करवाया गया था। वास्तव में ये पांच हवेलियों का समूह है। इन हवेलियों का निर्माण 1805 ई. में प्रारम्भ हुआ जो 1860 ई. में समाप्त हुआ। इस प्रकार 50 से अधिक वर्षों में तैयार हुए इस हवेली समूह को जैसलमेर का सबसे पुराना व सबसे बड़ा हवेली समूह माना जाता है। तात्कालिक समय में ये हवेलियां जैसलमेर की समृद्धि का प्रतीक थी।

पटवों की हवेली

यह हवेलियां अत्यंत सुन्दर वास्तुकला यथा – बारीक नक्काशीदार पत्थर का कार्य, इनकी बहुस्तरीय संरचना, रंगीन कांच की खिड़कियाँ, झरोखे (लटकती हुई बालकनी), चित्रित दीवारें छज्जों की अलंकृत कारीगरी और विशाल आँगन के लिए प्रसिद्ध है। इन हवेलियों के निर्माण में राजपूत व मुग़ल शैलियों मिश्रण स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इनकी आंतरिक साज–सज्जा से उस समय की समृद्ध जीवन शैली का पता चलता है। वर्तमान में पटवों की हवेली को आंशिक रूप से संग्रहालयों में परिवर्तित कर दिया गया है जहाँ कलाकृतियाँ, पारम्परिक फर्नीचर और कलात्मक वस्तुएं प्रदर्शित है जो जैसलमेर के सांस्कृतिक इतिहास की झलक ही प्रस्तुत नहीं करती अपितु जैसलमेर के स्वर्णिम युग को भी दर्शातें हैं।

सलीम सिंह की हवेली :

सलीम सिंह की हवेली जटिल नक्काशीदार पत्थर, विलासिता, रहस्य और ऐतिहासिक भव्यता की समृद्धता का एक आश्चर्यजनक वास्तुशिल्प रत्न है जो अपने सुनहरे किलों व स्थाई आकर्षण के लिए जाना जाता है। इस हवेली का निर्माण 1815 ई. में तत्कालीन जैसलमेर शासक महारावल गजसिंह के समय उनके दीवान (प्रधानमंत्री) सलीम सिंह द्वारा करवाया गया था। उन्होंने अपनी हवेली को कुछ इस भव्यता से बनवाया कि वह शाही महल

से भी अधिक प्रभावशाली प्रतीत हो तथा महारावल के महल से अधिक ऊँची भी हो। अतः यह अंतिम समय में विवाद का विषय बन गया व महारावल द्वारा कार्य बंद करवा दिया।

सलीम सिंह की हवेली

यह हवेली सुनहरे—पीले बलुआ पत्थरों से बनाई गयी है। इसके निर्माण में सीमेंट व गारे का प्रयोग न कर पत्थरों को मजबूत लोहे की छड़ों से जोड़ा गया है। नृत्य करते मोर की आकृति में बनी छत में 38 नक्काशीदार बालकनी हैं जिनमें प्रत्येक में पत्थर कारीगरों के कौशल को दर्शाने के लिए एक विशिष्ट डिज़ाइन है। सूर्यास्त के समय यह हवेली एक रहस्यमयी रोशनी से जगमगा उठती है। इस हवेली को जहाज महल भी कहा जाता है। यह हवेली पारसी और राजस्थानी स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट नमूना है।।

नथमल की हवेली :

नथमल की हवेली राजस्थानी और फ्रेंच वास्तुकला का खुबसूरत नमूना है। इस हवेली का निर्माण 1885 ई. में तात्कालिक दीवान मोहता नथमल के लिए करवाया गया था जो कि स्वयं एक प्रसिद्ध वास्तुकार थे। इस हवेली का निर्माण दो मुस्लिम शिल्पियों दृ हाठी और ललू द्वारा मिलकर किया गया था। आश्चर्यजनक रूप से दोनों ने हवेली के दो भाग अलग—अलग बनाए, जिनकी सरंचना समान न होते हुए भी विलक्षण संतुलन दृष्टिगोचर होता है।

नथमल की हवेली

इस हवेली का बाहरी स्वरुप भव्य पत्थर की नक्काशी और झरोखों से भी जाना जा सकता है जो न केवल आवश्यकता के अनुरुप बनाये गए हैं बल्कि इसके सौन्दर्य को निखारने के लिए भी हैं। हवेली चबूतरों पर बने एक–एक हाथी दीवान पद की गरिमा का परिचायक हैं। मुख्य दरवाजे पर बने महराब जालीयुक्त कलात्मक झरोखा, जालियों पर बनाये गए लतापात्र, पशु– पक्षी, अर्धविकसित कमल का बारीक उत्कीर्ण व जालीयुक्त झरोखे, छज्जे, कलात्मक स्तम्भ आदि पत्थर कला के बेजोड़ नमूने हैं। इसकी भीतरी दीवारों पर सोने की पालिश की गयी है। लकड़ी और पत्थर पर की सम्मिलित शिल्पकारी अत्यंत मनमोहक है। वर्तमान में नथमल की हवेली जैसलमेर का एक रुचिकर पर्यटन आकर्षण है, इसका आंशिक उपयोग आवास के रूप में होता है।

व्यास हवेली :

जैसलमेर की प्रसिद्ध व महत्वपूर्ण धरोहरों में से एक 'व्यास हवेली' है। यह न केवल स्थापत्य कला का अनुपम उदहारण है बल्कि बल्कि जैसलमेर के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जीवन की गहराई से भी जुड़ी है। इस हवेली का निर्माण 15वीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। इसका नाम महाभारत के महान ऋषि वेदव्यास के वंशजो से जुड़ा हुआ है। इस प्रतिष्ठित परिवार के व्यक्ति कई पीढ़ियों तक राज दरबार में सलाहकार, पुरोहित,और ज्योतिषी के रूप में कार्यरत रहें है।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 8.028 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 3, May- June 2025 |

व्यास हवेली

यह हवेली राजस्थान की पारम्परिक स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह हवेली भी जैसलमेर के पीले पत्थरों से निर्मित है जिसमें दीवारों, खिडकियों और झरोखो पर अत्यंत बारीक़ और सजीव नक्काशी की गयी है। इन पर फूलों, पत्तियों, पशु–पक्षियों और धार्मिक प्रतीकों की बारीक कारीगरी की गयी है, जो राजस्थानी शिल्प कौशल की परम्परा को जीवंत करती है। हवेली के हर कमरे में भित्ति चित्रों, शीशे की सजावट और पत्थर की जालियों का प्रयोग अति उत्तम है। झरोखे हवेली को न केवल सौन्दर्य स्वरुप प्रदान करते है बल्कि वेंतिलेशन की जरूरतों कोभी पूरा करतें हैं। ऐसा माना जाता है कि व्यास हवेली के भीतर कई गुप्त सुरंगे व तहखाने बने हुए है जिनका उपयोग युद्धकालीन समय में छिपने, अनाज संग्रहण या आपात निकासी के रूप में किया जाता था। यह हवेली केवल निवास स्थान ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी हुआ करती थी। यहाँ विद्वानों का जमावड़ा, धार्मिक अनुष्ठान, संगीत और कला का अभ्यास होता था। पुराणी हस्तलिखित पांडुलिपियाँ, वेड–पुराण खगोलशास्त्र की पुस्तकें और दुर्लभ कलाकृतियां हवेली की सांस्कृतिक विरासत को और भी समृद्ध बनाती है। वर्तमान में व्यास हवेली एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल बन चुकी है। यहाँ देश–विदेश से अनेकों पर्यटक आते हैं और राजस्थानी कला, संस्कृति और इतिहास को निकट से देखने का प्रयास करते हैं।

हवेली जवाहर निवास :

हवेली जवाहर निवास का निर्माण 1899 ई. में तत्कालीन महारावल शालिवाहन सिंह द्वारा करवाया गया था। इसे विशेष रूप से शाही आगंतुको, ब्रिटिश अधिकारियों और अन्य विशिष्ट अतिथियों के स्वागत हेतु बनवाया गया था। यह हवेली तत्कालीन राजपरिवार के आतिथ्य, समृद्धि और शान का प्रतीक थी। इसका नामकरण देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु के सम्मान में रखा गया था, जब वे स्वतंत्रता के बाद जैसलमेर आये थे। यह हवेली इंडो–सारसेनिक स्थापत्य शैली में निर्मित है जिसमें भारतीय, इस्लामिक और यूरोपीय स्थापत्य

शैलियों का समन्वय है। हवेली जवाहर निवास जैसलमेर के प्रसिद्ध पीले पत्थरों से निर्मित है, जो सूर्य की रोशनी में स्वर्णिम आभा प्रदान करता है।

हवेली जवाहर निवास

हवेली के मुख्य भवन में गुंबदाकार छतें, विस्तृत मेहराबें शाही वास्तुकला का बेजोड़ उदाहरण है। दीवारों, झरोखों तथा खम्भों पर बारीक पत्थर की नक्काशी जैसलमेर की उत्कृष्ट शिल्पकला को तथा बड़े–बड़े आँगन, बैठक–कक्ष, शयनकक्ष और भोजन कक्ष राजसी जीवन शैली को प्रतिबिंबित करते हैं। इसके चारों और हरित उद्यान, जल फव्वारे और शांत वातावरण हवेली को शाही निवास में परिवर्तित करते हैं। वर्तमान में हवेली जवाहर निवास को हेरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है जो पर्यटकों को शाही अनुभव के साथ–साथ आधुनिक सुख–सुविधाओं व पारम्परिक वैभव की झलक प्रदान करता है।

काठियावाड़ी हवेली :

काठियावाड़ी हवेली गुजराती एवं राजस्थानी स्थापत्य कला का मिश्रित स्वरुप है। इस हवेली का निर्माण 18वीं शताब्दी में गुजरात से आये समृद्ध व्यापारियों द्वारा करवाया गया था। क्योंकि तात्कालिक समय में जैसलमेर, भारत और मध्य एशिया के व्यापारिक मार्ग पर पड़ता था। इस हवेली बाहरी दीवारों पर जटिल नक्काशी, आकर्षक झरोखे और संकीर्ण खिड़कियां देखने को मिलती हैं। इन खिड़कियों में रंगीन कांच का सुन्दर उपयोग किया गया है, जिससे भीतर आने वाली रोशनी रंग–बिरंगी छटा बिखेरती है। हवेली की सजावट में काठियावाड़ी शैली के अनुसार लकड़ी की नक्काशीदार छतें व दरवाजे प्रमुख हैं, जो पीले बलुआ पत्थरों से बनी दीवारों के साथ सांमजस्य बनाते है। यह हवेली जैसलमेर में सांस्कृतिक विविधता और सह–अस्तित्व का अद्‌भुत उदाहरण है।

वर्तमान में इस हवेली का उपयोग निजी निवास व हेरिटेज होटल के रूप में किया जा रहा है जिससे इसकी संरचना और महत्त्व आज भी जीवित है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैसलमेर की हवेलियाँ स्थापत्य कला, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा की अनूठी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं। पीले बलुआ पत्थर की चमक, जालीदार झरोखे, जटिल नक्काशी, भित्ति–चित्रों एवं दर्पण कार्य के संयोजन में ये हवेलियाँ कला और संस्कृति दोनों का अनमोल संग्रह है।व्यापारियों की समृद्धि, राजपुताना–मुगल मिश्रण शैली, स्थानीय शिल्प कौशल का संरक्षण और आधुनिक उपयोग आदि मिलकर ये हवेलियाँ जैसलमेर की "स्वर्ण नगरी" पहचान को जीवित रखती हैं।

Refrences:

1. Aggarwal, R., & Sharma, P. (2019). Conservation challenges of Rajasthani havelis: A study of Jaisalmer's architectural heritage. Journal of Heritage Management, 4(2), 78-92.
2. Archaeological Survey of India. (2020). Annual report on conservation activities in Jaisalmer Fort and havelis. Government of India Press.
3. Bhatt, S. K. (2018). Traditional architecture and modern challenges: The case of Jaisalmer havelis. International Journal of Architectural Heritage, 12(3), 445-462.
4. Dhir, A., & Jain, M. (2021). Climate change impacts on sandstone heritage structures in arid regions. Conservation and Management of Archaeological Sites, 23(1), 34-48.
5. Gupta, V. (2017). Patwon ki Haveli: Architectural analysis and conservation strategies. Rajasthan State Archives.
6. Jaisalmer Municipal Corporation. (2022). Heritage conservation policy and implementation report. JMC Publications.
7. Mathur, K. L., & Singh, R. (2020). Tourism pressure on heritage havelis of Jaisalmer: Socio-economic implications. Tourism Management Perspectives, 35, 100-115.
8. Ministry of Culture, India. (2019). National mission on monuments and antiquities: Progress report on Rajasthan sites. Government of India.
9. Paliwal, N. (2021). Structural deterioration in historic sandstone buildings: A case study of Jaisalmer havelis. International Journal of Architectural Heritage, 15(4), 567-583.
10. Rathore, M. S. (2018). Folk architecture of Rajasthan: Conservation and adaptive reuse of traditional havelis. Rawat Publications.
11. Sharma, A., & Agarwal, S. (2022). Digital documentation and 3D modeling for heritage conservation: Jaisalmer case study. Journal of Cultural Heritage, 45, 89-102.
12. Singh, B. P. (2020). Water scarcity and its impact on heritage structures in desert regions of Rajasthan. Environmental Archaeology, 25(2), 178-189.
13. Soni, R. K. (2019). Community participation in heritage conservation: Lessons from Jaisalmer's merchant havelis. International Journal of Heritage Studies, 25(8), 823-841.
14. UNESCO World Heritage Centre. (2021). State of conservation report: Hill forts of Rajasthan including Jaisalmer Fort. UNESCO Publications.
15. Vyas, D., & Kulshrestha, Y. (2020). Traditional building materials and techniques in Rajasthani havelis: Conservation implications. Journal of Architectural Conservation, 26(1), 45-63.

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com